ब्रह्माकुमारियों द्वारा अंधश्रध्दायुक्त भक्तिमार्ग की रिहर्सल- 2

ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा दुनियाभर में, मंदिरों तथा सार्वजनिक स्थानों पर लगाई जाने वाली चित्र प्रदर्शनियों में यह समझाया जाता है कि हम यह शरीर नहीं, अपितु आत्माएँ हैं तथा 5000 वर्ष के चतुर्युगी मनुष्य सृष्टि चक्र में चौरासी जन्म लेते हैं। पहले दो युगों में अर्थात् सतयुग और त्रेतायुग में अविनाशी सुख-शांति होने के कारण कोई भक्ति नहीं होती और केवल एक धर्म अर्थात् आदि सनातन देवी-देवता धर्म होता है। सभी सर्व गुण सम्पन्न देवी-देवताएँ होते हैं; किंतु हिन्दू शास्त्रों में किये गये उल्लेखानुसार न तो वहाँ कोई राक्षस होते हैं और न ही उनके विनाश के लिए भगवान का अवतरण होता है; किंतु जब द्वापरयुग में में स्वयं को देह समझने के कारण दुख-अशांति का प्रारंभ होती है, तब भक्ति प्रारंभ होती है।

द्वापरयुग में आरंभ हुए भक्तिमार्ग के प्रारंभिक चरणों में भारतवासी शिवलिंग शिवलिंग या शंकर की नग्न मूर्तियों के रूप में पूजा करते थे; किंतु, बाद में उन्होंने सतयुग तथा त्रेतायुग के अपने ही पवित्र स्वरूप अर्थात् युगल रूप में देवी-देवताओं की भक्ति प्रारंभ कर दी, जैसे- शंकर-पार्वती, लक्ष्मी-नारायण, राधा-कृष्ण, राम-सीता इत्यादि की पूजा। कलियुग के प्रारंभ के साथ ही हिन्दुओं ने केवल देवी या केवल देवता की, सिंगल पूजा शुरू कर दी, जैसे केवल कृष्ण की, शंकर की, इत्यादि। फिर मानव एवं पशु के मिश्रित रूप (जैसे हनुमान, गणेश, नरसिंह आदि) तथा निर्जीव वस्तुओं (पत्थरों, पेड़ों) के रूप में भगवान की पूजा की जाने लगी। जिन देवी-देवताओं की भक्ति करते थे, उन्हें जल में विसर्जित भी करने लगे (जैसे देवी दुर्गा, गणेश)। द्वापर और कलियुग में, 63 जन्मों से की जा रही भक्ति का लक्ष्य तो सुख-शांति प्राप्त करने का था; किंतु अव्यभिचारी भक्ति भक्ति के स्थान पर व्यभिचारी भक्ति करने के कारण न तो इससे अविनाशी सुख-सुख-शांति की प्राप्ति हुई, न ज्ञान मिला और न भगवान। गीता में भी लिखा हुआ हुआ है कि यज्ञ, जप, तप, पूजा इत्यादि से भगवान की प्राप्ति नहीं हो सकती।

जब कलियुग अंत में भक्ति पूर्णतया तमोप्रधान हो जाती है, धर्म के नाम पर अधर्म फैल जाता है, मनुष्यों का नैतिक पतन हो जाता है, तब निराकार परमपिता परमात्मा शिव को स्वयं इस धरती पर अलौकिक अवतरण लेना पड़ता है। वे माँ के गर्भ से नहीं, अपितु किसी साधारण वृध्द, अनुभवी मनुष्य (जिसका कर्त्तव्यवाचक नाम प्रजापिता ब्रह्मा है) के शरीर में प्रवेश कर हमें भक्ति का फल, फल, ज्ञान देते हैं। प्रजापिता ब्रह्मा के मुख से ईश्वरीय ज्ञान सुनाकर वे एक ईश्वरीय ब्राह्मण परिवार की स्थापना करते हैं, जो कि बाद में ब्रह्माकुमारी संस्था संस्था का रूप ले लेता है। जब तक ब्रह्माकुमारी संस्था के संस्थापक दादा लेखराज (उर्फ ब्रह्मा बाबा) जीवित थे, निराकार परमपिता शिव उनके मुख से नित्य ज्ञान और राजयोग की शिक्षा के द्वारा ब्रह्माकुमार-कुमारियों की पालना करते करते थे। पुरुषोत्तम संगमयुग में परमपिता शिव द्वारा प्रारंभ किये गए इस ज्ञानमार्ग में भक्तिमार्ग की किसी रसम-रिवाज़ का अंशमात्र भी नहीं था।

जैसे किसी भी ड्रामा या नाटक का वास्तविक मंचन होने से पहले उसकी तैयारी या रिहर्सल की जाती है, उसी प्रकार 5000 वर्ष के इस नाटक की रिहर्सल 100 वर्ष के पुरुषोत्तम संगमयुग में की जाती है। जैसे उस विशाल नाटक में 2500 वर्ष बाद, द्वापरयुग से भक्तिमार्ग प्रारंभ होता है, उसी प्रकार संगमयुग में सन् 1969 में दादा लेखराज के देहावसान के बाद निराकार परमपिता शिव के बदले हुए साकार व्यक्तित्व एवं स्थान को न पहचान पाने के कारण ब्रह्माकुमारी संस्था में भी सूक्ष्म एवं स्थूल रूप में भक्ति की रिहर्सल आरंभ हो जाती है।

संगमयुग के प्रारंभ में ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ प्रजापिता (सेवकराम की आत्मा) आत्मा) या ब्रह्मा (दादा लेखराज) के द्वारा एक परमपिता शिव को ही याद करते करते थे। यह थी द्वापरयुग में शिवलिंग या शंकर के रूप में एक शिव की पूजा करने की रिहर्सल; किंतु सन् 1969 में ब्रह्मा बाबा के देहावसान के पश्चात् ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ अपने आश्रमों और घरों में ब्रह्मा (दादा लेखराज) एवं मम्मा मम्मा (सरस्वती) के चित्र प्रदर्शित करके शिव को याद करने लगे। यह थी द्वापरयुग के पूर्वार्ध्द में युगल रूप में देवी-देवताओं की भक्ति की रिहर्सल; किंतु कुछ वर्षों बाद कई ब्रह्माकुमारी आश्रमों में केवल ब्रह्मा (दादा लेखराज) तथा

ज्योतिर्बिंदु शिव के चित्र प्रदर्शित किये जाने लगे। यह थी द्वापरयुग के उत्तरार्ध्द में सिंगल देवताओं के मंदिर बनवाए जाने की यादगार। ब्रह्मा बाबा के देहावसान के कई वर्षों बाद आम ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ इस ईश्वरीय परिवार में देहधारी गुरु बन बैठे दादी, दीदी व अन्य वरिष्ठ ब्रह्माकुमार-कुमारियों को अधिक महत्व देने लगे। इसलिए ब्रह्माकुमारी आश्रमों में इन देहधारी गुरुओं के भी चित्र प्रदर्शित किये जाने लगे, जबकि परमपिता शिव ने तो दादा लेखराज (ब्रह्मा) के भी चित्र प्रदर्शित करने से सख्त मना किया है। अब तो परिस्थिति इतनी खराब हो गई है कि ब्रह्माकुमारी संस्था द्वारा लाखों या करोड़ों रुपये खर्च करके आयोजित किये जा जा रहे कार्यक्रमों में त्रिमूर्ति शिव और ब्रह्मा-सरस्वती के चित्र भी प्रदर्शित नहीं किये जा रहे हैं। पर्चों, बैनरों, निमंत्रण-पत्रों इत्यादि में केवल वर्तमान प्रशासिकाओं अर्थात् दादियों के चित्र प्रदर्शित किये जा रहे हैं। निस्संदेह इन दादियों ने अपने लौकिक परिवार का त्याग कर लंबे समय से ईश्वरीय सेवा की है; किंतु इस संस्था संस्था के वास्तविक संस्थापक त्रिमूर्ति शिव या ब्रह्माकुमारियों द्वारा माता-पिता माने जाने वाले ब्रह्मा-सरस्वती को दरकिनार करके इन दादियों का प्रचार करना एक स्वस्थ परंपरा नहीं है। कुछ ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ तो कतिपय वरिष्ठ ब्रह्माकुमार-कुमारियों से इतना स्नेह करते हैं कि उन्हें परमपिता शिव से अधिक महत्व देते हैं। यह वास्तव में द्वापरयुग एवं कलियुग में विभिन्न देवी-देवताओं, गुरुओं और निर्जीव वस्तुओं की पूजा करने की रिहर्सल है। उक्त शूटिंग या रिहर्सल रिहर्सल जानबूझकर नहीं की जाती है; लेकिन इस बेहद के नाटक में कुछ आत्माओं द्वारा अपनी भूमिका अदा करते-करते स्वतः हो जाती है। इसलिए इस शूटिंग की उक्त जानकारी का लक्ष्य किसी आत्मा-विशेष की भूमिका की निंदा करना नहीं है।

संगमयुग में, ईश्वर द्वारा स्थापित ज्ञानमार्ग में ईश्वरीय परिवार के कुछ सदस्यों द्वारा भक्तिमार्ग की शूटिंग या रिहर्सल का ज्ञान भी स्वयं परमपिता शिव शिव ही देते हैं; किंतु किसी और स्थान (कंपिल, उत्तर प्रदेश) एवं मनुष्य शरीर के द्वारा, जिसका कर्त्तव्यवाचक नाम रखा जाता है-'शंकर'। इस सच्चे गीता ज्ञान के के सार को समझकर कई ब्रह्माकुमार-कुमारियाँ पाण्डवों की भांति परमपिता शिव

की परिवर्तित भूमिका को पहचान रहे हैं। जब सभी ब्रह्माकुमार-कुमारियों को इस ज्ञानमार्ग में चल रही भक्ति से वैराग्य आ जाएगा और वे कमल पुष्प समान घर-घर-गृहस्थ में रहते हुए साकार में आये निराकार ईश्वर की याद से प्राप्त शक्तियों शक्तियों के आधार पर ज्ञान को धारण करेंगे, तो फिर देहधारी गुरुओं या देवी-देवताओं के रूप में भक्तिमार्गीय शूटिंग करने वाले ब्रह्माकुमार-कुमारियों का विसर्जन हो जाएगा तथा इस धरती पर एक धर्म, एक रामराज्य, एक भाषा और एक मत वाले स्वर्ग की स्थापना हो जाएगी।

ओम शांति